नगर ॥ मग रोकि रह्यो० ॥ रंगपाल रँग डारि भिगोई, चोलो चुनर मोरि जबर मगर ॥ मग रोकि० ॥ १४ ॥

तुमहीं अनोखे होरी के खेलैया। छलबल छतिया हमारी छुयो दैया ॥ तु० ॥ जाइ चलै हो भले जु भले सब जानि लई लगरैया कन्हैया। रंगपाल परतीत कहां अब तो संग खेलति मोरि बलैया ॥ १५ ॥

छैल छबीले समझ खेलो होरी। घूंघट खोलि मलन देवै रोरी ॥ रंगपाल दूंगी लाखन गारी, जो कहुँ छतियां छुवोगी हो मोरी ॥

अब कैसे पनियां भरन जइबे आली। रोकैगो गैल छैल बन मालो ॥ अब० ॥ योंही हुतो रो करत बरजोरी अब तो कहैगो फगुनवां कि चाली। रंगपाल यकहू नहिं मनिहै देवै जो लाख हजारन गाली ॥ १७ ॥

तिताला।

फाग मैं कैसे खेलन जाऊँ। नैनन हूं भरि लखन न पावति केहि बिधि जिय समुझाऊं ॥ नेक झांझरी सो झुकि झांकत नाम धरत सब गाऊं। परबश को सुख लह्यो आज लौं होत हिये बिष खाऊं॥ ल्याउ गुलाब लाल करती लुकि बलि पग परसि सुनाऊं। रंगपाल निज छतियां धरि कछु बिरह ताप सियराऊं ॥ फाग मैं ॥ १८ ॥

मेरि डरैगो बलाय फगुनवां में। आज लौं जिय तरसायो सखोरी अब तो नहीं रहि जाय फगुनवां में। होरी में है सखि कौन कि चोरी को मरिहै पछताय फगुनवां मैं। रंगपाल सब कसक मिटैहौं लैहौं मैं गरवां लगाय फगुनवां में ॥ मेरी डरैगो० ॥ १९ ॥

परज ।

होरी खेलन मिस ऐहै लाल तुमैं गरवां लगैहै। इन दरसन प्यासी अँखियन को रूप सुधा अचवैहै ॥ याही ब्योत विचार कै सहू दिन दस जियरा बुझैहै। रंगपाल सब कसक मिटैहै ले अब कहुं कढ़ि जैहै ॥ लाल तुमैं० २० ॥

नीखे तुमहीं खेलारी, देत हो लाखन गारी। मारत छैल छली छतियां तकि कुमकुम अरु पिचकारी॥ बरजोरी रोरी मुख मीडत घूँघट को पट टारी। रंगपाल हठि बीच बगर में लूटत लाज हमारी ॥ देत हो लाखन गारी ॥ २१ ॥

छैल तोसे फगुआ न खेलौं, जानति जियरा कि बात। कीजे कौन परेखो छल बल छतियाँ छूं छूं जात ॥छैल०॥ चूमत बदन लगावत रोरी, बरजोरी गर लपटात ॥ छैल० ॥ रंग पाल पिय सौंह करत इत; उत मुरि दुरि मुसकात ॥ छैल० ॥ २२ ॥

तिताला ।

स्याम तुमैं युवती बेष बनाऊँ। सौंह वीर की सखन लखत पुनि केसर रँग अन्हवाऊँ ॥ बरजोरी रोरी कपोल मलि बहुबिधि नाच नचाऊँ। रंगपाल वृषभानु लली की तौ हौं सखी कहाऊँ ॥ स्याम० ॥ २३ ॥

हरि तुम बड़े खेलारि कहावत ॥ अब छूटिबो दूर है नाहक बल करि खेद बढ़ावत ॥ काह करेंगी सखा तिहारे जिन को दिग्गि टक लावत ॥ बिदित बली बलिजू सहाय हित तिनको क्यों न बुलावत ॥ करिहैं युवती बेषहु ते तुम बढ़ि बढ़ि बात सुनावत ॥ रंगपाल छोड़े को छूटे जिहि झगरो अस भावत ॥ हरि० ॥ २४ ॥

यति० ।

अब क्यों हरि मन पछितात, हाहा खात खरे ॥ रार करत तब नीको लाग्यो केंसेहु ते इतरात, जा दिन चीर हरे ॥ बर जोरी होरी में काजर करि कैसे चले मुसकात । आनँद उमग भरे ॥ रंगपाल कछु बस न चलैगो अब तो बनैगी बात, प्यारी पाय परे ॥ अब क्यों० ॥ २५ ॥

तुमहीं अनोखे खेलारी भये कोउ ऐसी करत बरजोरी रे ॥ केसर रँग बरसाय भिगोई चटकी चुनरिया मरोरी रे ॥ लपकि झपकि मुरकाई कलैया मुखमें मलि गयो रोरी रे ॥ रंगपाल अँगिया मसकायो कौन खेले ऐसी होरी रे ॥ २६ ॥

तिताला ।

छैल हो छलछन्द तिहारी ॥ जानि लई हमसारी ॥ छयल हो० ॥ रंगपाल मुख रोरी मलन मिस, अँचरा छुवत हमारो ॥ छैल हो० ॥ २७ ॥

अपरंच ।

तोसों अब खेलोंगी न होरी ॥ उर लपटावन के हित मिस करि आवत मोड़न रोरी ॥ अंचल झटकि उघारत घूँघट लाज लेत हो मोरी ॥ रंगपाल मानत नहिं ऐसो बलति कहूं बरजोरी । तोसों अब खेलोंगो मैं होरी ॥ रेखति रेखैं देखैंगे सब तुमको गहि बरजोरी ॥ नारि बेष रचि मुख रोरी मलि केसर के रँग बोरो । रंगपाल यशुदा को दिखाऊँ तौ वृषभानु-किशोरी ॥ तो सों० ॥ २८ ॥

देखो नन्द महर को छोरो । नन्द ग्रामते बरसाने को आइ है खेलन होरी । निपट लजीलो अति सुकुमारी अबहीं बैस को थोरो ॥ हारि तिय बेषनि हारि हँसी सब रंगपाल रँग बोरी । ॥ देखो० ॥ ३० ॥

तुम अँगिया हमारी निहारि, मारत पिचकारी । अबिर गुलाल लगावत मुख में, घूंघट को पटटारि, बिहँसत दै तारी । रंगपाल जू सूधे रहो अब, ना तरु कहति पुकारि, देबै सो गारी ॥ ॥ तुम० ॥ ३१ ॥

सिगरी लाज गँवायो, नई अंगिया मसकायो । आइ छिपाय सखीनहु पै, तुम सो चोरी प्रगटायो । हाहा करत एक नहिँ मानो, हँसि कसि हिय लपटायो ॥ नई अँगिया मसकायो ॥ अबिर गुलाल डारि बरजोरी केसर रँग अन्हवायो । तोखो हार वियोखो बारन मुकता लर बगरायो ॥ नई० ॥ पाय इकन्त कपोल कन्त हठि दन्त को दाग लगायो । रंगपाल कीनो मनभायो ननदसों भोर हसायो । नई अं० ॥ ३२ ॥

अब को पनियां को जाय, सजनी ढीठ छैल । गारी देत करोरि बोरि रंग फोरि देत पुनि छैल ॥ बरजोरी रोरी मुख मीजत रोकि रहत हठि गैल । रंगपाल बरजो नहिं मानत ठानत ऐसी फैल ॥ सजनी० ॥ ३३ ॥

मोरे मुखमें मलिगो अबीर, ऐसो ढीठ छयल ॥ जाति रही मैं नीर भरन हित नदि जमुना के तीर ॥ झपटि भिगोय दई बरजोरी केसर के रंग चीर ॥ रंगपाल यह कैसो अनैसो तूँ पहचानति बीर ॥ ? ऐसो० ॥ ३४ ॥

अँगिया मसकि गई, ऐसो होरी न खेलव लाल॥ अँगिया०॥ छल बल छैल टारि घूँघट पट मुख में मलत गुलाल॥ बरजोरी गरवां लपटावत ऐसी नहीं कहीं चाल॥ रंगपाल मोरि लाज गँवावत लखि बिहँसति ब्रजबाल॥ अँगिया म०॥ ३५॥

मोसे रसिया छयल ब्रजराज, होरी खेलो सँभर॥ काल्ह गई कर गई बीर सौं आज रहौंगी न बाज। रोरी मलि रँग बोरि छाड़िहौं करि युवती को साज॥ रंगपाल जू रेखति रेखें देखेंगे गोप समाज॥ होरी खेलो सँभर०॥ ३६॥

मोरि काल्ह गयो मसकाय, अँगिया जगर मगर॥ लाल गुलाल मलौंगी मुख में केसर रँग अन्हवाय। चूरी चुनर पहिराय अंजन दै लेबै दाव चुकाय॥ रंगपाल जू आज छाड़िहैं बहु विधि नाच नचाय॥ अँगिया जगर०॥ ३७॥

निसि खलि कौन सँग फाग, आए भोर भये॥ गरद गुलाल भरी जुलफन मैं नैनन मैं अनुराग। रोरी कलित कपोल केसर रँग भीगो लटपट पाग॥ रंगपाल यह जोरी अचल हो धनि २ भाग सुहाग॥ ३८॥

पुनः।

उनहि पै जाहु चले तुम हमसे न बोलो लाल॥ आँखन मैं अनुराग दिये भरि जुलफन गरद गुलाल॥ दन्तक दाग कपोलन दै किय तिलक महावर भाल॥ रंगपाल निन रैन फाग रचि मिले विन गुनमाल॥ उनहिं०॥ ३९॥

तिताला ।

कोउ मारत अस पिचकारियां ॥ जाति न चोट सँभारि रंग की लचति लङ्क लचकारियां ॥ हौं डरपति तुम ग्वाल सखनयुत ब-हँसत दै दै तारियां ॥ लै गुलाल पुनि दलि मलि डारत देत हौ गनि गनि गारियां । बरसाने, कौ सबै लड़ैंतो यक ते यक सुकु-मारियां ॥ तिनमैं श्री वृषभानुसुता सरि करि न सकति सुर ना-रियां । ग्राम ग्राम दधि बेचनहारी गोकुल की नहिं ग्वारियां ॥ रंगपाल ब्रज रसिक सिरोमणि, है तुमरि बलिहारियां ॥ कोउ मारत० ॥ ४० ॥

दादरा वा तिताला ।

भला कोउ मारत अस पिचकारी । बँची जाय बल हाय दई हो कैसे सुघर खेलारी ॥ देखत नाहिं मुरार तार ते खोनी है सुकुमारी । लचकति लङ्क सङ्क हिय सरसत लागत बिजन ब-यारी ॥ लै गुलाल अँग सिरिस सुमन समताहु पै दलि मलि डार । रङ्गपालजू वाह छैलजू बलिहारी ॥ भला० ४१ ॥

नहिं भूलै दई मुसुकान, वह गोरे मुख की । अबिर गुलाल सुगन्धु भरी छलकैं भलकैं उर आन ॥ वंउ सुगन्ध सरसान चहूं दिस टलूटा छहरान । रंगपाल अधरन की सोभा रस रूराख की बतरान ॥ वह गोरे मुख की० ॥ ४२ ॥

फागुन मैं चले जो बिदेस पिया । तोपै कोटी यतन ते, रहि है न या तन मोर जिया ॥ सब खेलैंगी होरी, जैहै तुमैं बिन फाटि हिया । अहो रंगपालजू , जैहै नहीं फिर हाय सिया ॥ फागुन मैं ॥४३ ॥

का तोरे मन में समान, बेदरदो जिया मोर मोर मरबे। अब का करूं भगवान ॥ बे० ॥ रङ्गपाल सब निज घर आवत तूं कियो चहत पयान ॥ बेदरदो० ॥ ४४ ॥

छाय रहे परदेस फगुनवा में। आप न आये पठाये न पतिया पाये न हाय संदेस फगुनवां में ॥ खेलेंगी अब होरी सखी हम धरबे योगिनियां को भेस फगुनवां में। रङ्गपाल बिन जिय कैसे राखब यह जिय होत अँदेस फगुनवां में छाय रहे० ॥ ४५ ॥

होरी में नहिं आये, हमारे पिया। परदेस में छाये ! ! देके बिसास निरास किया ॥ होरी में० ॥ रङ्गपाल चहुँ धूम मचो है, तलफि तलफि मोर, जात जिया ॥ होरी में० ॥ ४६ ॥

फागुन में न आये हाय स्याम। कछु कहत बनत नहि दहत काम ॥ चहुँओर नारि नर धाम धाम, होरी कि मचे रहे धूमधाम। नहिं रङ्गपाल धीरज को नाम, हरि बैठि रहे ह्वै निठुर राम ॥ फागुन में० ॥ ४७ ॥

होरी की आई बहार प्रितम बिन, से राखौं प्रान। कर मलि मलि पछितात जात सखि इकछन कलप समान ॥ प्रितम० ॥ सुनियत हैं चहुंओर रैन दिन धमक धमार कि तान। रङ्गपाल मिरदङ्ग चङ्ग धुनि हाय लगत जैसे बान ॥ प्रितम बिन० ॥ ४८ ॥

फागुन बीता, हायरे पिया अजहूं न आयरे। दे बिसवास बिसारि सुरति मोरि रहे बिदेसवां में छायरे ॥ पतियो नाहिं पठाय सखीरे अब करूं कौन उपायरे। रङ्गपाल सब होरी खेलें मोर तलफि तलफि जिय जायरे ॥ पिया अजहूं० ॥ ४९ ॥

ननदी बिचारू सगुनवां, बिरन तोर अजहूं न आये। बिरह दहै दसगुनवां॥ बिरन०॥ रङ्गपाल किमि धीर धरौं अब बीतो जात फगुनवां॥ बिरन०॥ ५०॥

आये फगुनवां मैं प्राणपियारे। आज सखी धनि भाग हमारे॥ आये०॥ रङ्गपाल अनुराग फाग रचि लपटि गरे सिरौंयरे हियारे॥ आये०॥ ५१॥

डारि गयो मोपै हँसि र रामा, जदुआ को छैल अबीर॥ चितवन चारु चुभी है चित में, जियरा धरत नहिँ धीर॥ छैगर हाय बावरे की गति, रुकत नहीं दृग नीर॥ रंगपाल बरबस मन लैगो, कसि कसि प्रेम जँजीर॥ ५२॥

गागरिया छलकाय भुलनियां मैं, गरद गुलाल भरी॥ रंगपाल रंग डारि चुनरिया, सखि सरबोर करी॥ ५३॥

क्या कहूं सजनो अबीर बहाने, जदुआ मोपै हँसि डारि गयो री॥ बरबस ढारि सनेह सुधाघट, सोच सँकोच निकार गयोरी। जुलफन फन्द फँसाय मनहिं अरु, नैनबान हिय मारि गयोरी॥ रंगपाल छन छैल दरस दै, बिरह-अगिनि उर बारि गयोरी॥ ५४॥

राग-बिलावल धमार।

अब चलो ऐसी होरी न खेलब, बरजोरी गर लपटावत॥ पिचकारिन रँग और कुमकुमा, छतियां ताकि चलावत। टारि घुँघट पट बदन हमारो, चूमत अबिर लगावत॥ रंगपाल हठि बीच बगर में, हमरो लाज गँवावत॥ अब०॥ ५५॥

मोरी चूनर रँग में भिगोई छयल रंगपाल मुख रोरी मल्यो री, बरजोरी हठि बोध गयल ॥ मोरि० ॥ ५६ ॥

ललन पिचकारी न मारो, रँग की चोट यह, क्यों सहि है सुकुमारो ॥ रँगपाल छबिही के भारन, सिसकति प्राण पियारी ॥ ललन० ॥ ५७ ॥

लई मोरि लाज रे दैया, नौखे खेलैया, चंचल कूँगो छलैया । रङ्गपाल अब ऐसी होरी, खेलति मोरि बलैया ॥ लई० ॥ ५८ ॥

ताल धमाल ।

रङ्ग मोपे डारी रे आली, ढीठ छैलवा, भीज गई मोरी सारी । गरद गुलाल भरी अलकान में लाख हहा करि हारो ॥ बरजोरी मुख रोरी मल्योरी घूघट को पट टारो । रङ्गपाल पुनि कठिन कुमकुमा छतियां तकि तकि मारी ॥ रंग० ॥ ५९ ॥

कलिंगड़ा ।

मन मेरो लैगो चुराय छैल मोहिं फगुआ न दैगो । मोहन मन्द बैन मधुरे कहि प्रेम बीज उर ब्वैगो ॥ मन मुसकान हाय हियरा में थाती सम सखि धैगो । रङ्गपाल अब भई बावरी चितवन में कछु कैगो ॥ छैल० ॥ ६० ॥

ताल रूपक ।

खेलत दोउ फूलो फाग । फूल गूंधे केश प्यारी फूल को उत पाग ॥ फूल के भूषण सजे दोउ फूल उर अनुराग । फूल फरश सुफूल मण्डप भवा फूलन लाग ॥ फूल बरसत फूल सरसत फूल रङ्ग पराग । रङ्गपाल पिया प्रिया को धन्य भाग सुहाग ॥ खे० ॥ ६१ ॥

तिताला ।

सिय राम रसिक रस बोरी, खेलैं होरी हो ॥ इत उत सो जुरि सखिनि सकेलैं दोउ गुलाल कुमकुम केसर रँग रेलैं, कोउ गुलाल मुख मेलैं, भोरो हो ॥ तिहि छन रघुनन्दन छल सोरी, ले सुरङ्ग सरबोर कियोरी, भ्रकुचि रहो मुख मोरी, जनक किशोरी हो । रंगपाल त्यों सखि जन दौरीं, छोनि लई बनमाल पिछौरी, दै अंजन बर जोरी, मलि गईं रोरी हो ॥ सियराम रसिक० ॥ ६२ ॥

पिचकारिन रँग बरसाय सखी नइ चूनरिया सरबोर करी । मुख रोरी मली बरजोरी धाय पुनि अलकन गरद गुलाल भरी ॥ तकि मारि कुमकुमा अवध छैल बगराय दई मुकतन की लरी । अरुझत नित नित मोसे रङ्गपाल, अब को बसिहै इनकी नगरी ॥ पिचकारिन० ॥ ६३ ॥

अवध छयल जनि मारो पिचकार हो ॥ रँग की चोट नहिँ जाति सम्हारि हो ॥अ०॥ रंगपाल सिसकति छबि भारन सिरिस सुमनहू ते देखो सुकुमारी हो ॥ ६४ ॥

जति० ।

को बसिहैं अब अवध नगर में । होन लगो बरजोरी डगर में ॥ का० ॥ तकि २ मारि कुमकुमा लालन लाज लई मोरि बीच बगर में । रंगपाल नित मोसे अरुझत काह लहत ऐसी रगर भगर में ॥ को बसिहैं० ॥ ६५ ॥

अवध छैल मोरि छाड़ो डगरिया ॥ नित अरुझत मोसे

कुवो ना गगरिया ॥ अ० ॥ रङ्गपाल रँग बूंद परैगो तौ करिहौं सरबोर पगरिया ॥ अबै० ॥ ६६ ॥

नहिं मानत रसिया, अब छैल ॥ कैसे बन प्रमोद अब जाउँ सैल ॥ नहीं० ॥ रङ्गपाल रंग भरि पिचकारी चितवत ठाढो बीच गैल ॥ नहीं मानत० ॥ ६७ ॥

दादरा।

प्राणप्यारी हमारी सुकुमारी ॥ सुमन सेज राखति नहिं कहुँ अलि लै न जाय रस बुन्द विचारी ॥ उड़ति शिरोष सुमन पखुरी सौं लगत रसिक वर बिजन बयारी ॥ रङ्गपाल बलि चोट रंग की कौन भांति सौं सकति सँभारी ॥ प्राणप्यारी हमारी० ॥ ६८ ॥

आज तौ बनि आई तिहारी ॥ सारी भिगोय दई रँग डारी। रोरी मली मुख घूंघट टारी ॥ पाय अकेली करो मन भाई मसकाई अँगिया जरतारी ॥ रङ्गपाल सब दांव चुकैबे जा दिन ऐहौ नगरियां हमारी ॥ आज तौ० ॥ ६९ ॥

भिगोई हमरी चूनरी रे। याते भिगोइ अङ्ग चटक रँग देखत नहिं सखि दूनरी र ॥ तानि चले पिचकारी बिगरि जैहै अब जु पर्यो इक बून री रे। रंगपाल तौ नारि बेष रचि छाड़हुँगो यहि जून री रे ॥ भि० ॥ ७० ॥

बेदरदी छैल तूं गजब किया। हाय लाज मोरि लूट लिया ॥ बेदरदी० ॥ रंगपाल मुरकाई कलैया नई अँगिया मसकाय दिया ॥ बेदरदी० ॥ ७१ ॥

तोर सब भँतियां कपट भरी बतियां करत मोसे घतियां रे सांवलिया ॥ रङ्गपाल करि अबिर बहनवां झूठहिं कर झझकरि कुअत मोरी छतियां रे सांवलिया ॥ ७२ ॥

ग़ज़ल।

अजब सामान की होरी, अहा हाहा, ओहो हो हो ।
भयो क्या प्रेम रस बोरी, अहा हाहा, ओहो हो हो ॥
सखी सुभगा झपटि तौलौं, लई चट पीतपट छोरी।
मलो सिय पिय बदन रोरी, अहा हा हा, ओहो हो हो ॥
सुसीला दौरि अंजन लै, दई दृग आँजि बरजोरी।
हँसीं सब तारि दै गोरी, अहा हा हा ओहो हो हो ॥
लजे सब रंगपाल सखा, बजी सिय जीत की ढोरी।
जियौ युग युग मगन जोरी, अहा हा हा, ओहो हो हो ॥

तिताला वा जति वा दादरा।

मगन रहौ हो, मोर होरी के खिलैया। नित नव अनँद बधैया ॥ मगन०। रंगपाल युग युग जियो जोरी, ओसुख सकल समैया ॥ मगन रहौ हो ॥ ७३ ॥

॥ इति होरी ॥

अथ फाग।

आयो चतुर खेलारी बिहारो, हेरी प्यारो ॥ टै चुटकी इतराय स्याम को परम चतुर सखि सारो ॥ झेलन लागो झोरि झमकि झुकि कुमकुम अरु पिचकारो ॥ आये० ॥ माचो धूम धाम दुहुँ दिसि ते टैसे ननि सुकुमारो ॥ लीनो घेरि चहूं दिसि ते घनस्यामहिँ मनहु छटारो ॥ आये० ॥ अबिर गुलाल धूम घूधरि करि ललिता चन्द्रकलारो ॥ स्यामहि गहि रचि नारि बेष कहि चोर हरे हो मुरारी ॥ आये० ॥ रङ्ग बोरि कहि व्यङ्ग परस्पर बिहँसति दै दै तारो ॥ देखु छोहरी नन्दराय को रङ्गपाल बलिहारो ॥ आये० ॥१॥

पुनः ।

यार दिल मानत नाहीं देजा तनक दिदार ॥ इक छन रुकत न क्योहूं जात नैनन ते जल धार ॥ छनहीं छन अधिकात हैं, हाय बिरह की झार ॥ यार० ॥ भई अब चहति बावरी रह्यो न तनहिँ सँभार ॥ आवति सुरति सुँवलिया तोरी छतियां होत दरार ॥ यार० ॥ भई बदनाम पियरवा तोपर तनमन वार ॥ जीव जाय बरु प्रीत न छूटै तब तो कियो करार ॥ यार० ॥ तोहि अजु दरद न आवे तरसत प्राण हमार ॥ रङ्गपाल प्यारे मोहिं मिलिजा, या कि मार तरवार ॥ यार दिल मानत नाहीं ॥ २ ॥

भला निरमोहिया बालम हमरो सुरतिया बिसारो ॥ नैन सो नैन लगाये तब रसिक बिहारी ॥ हँसि निज बस बरबस करि लीनो प्रेम फांसु गल डारो ॥भला०॥ छैल छतियां ल०टाये कहि प्राणपियारो ॥ छन बिछुरब नहिं कहे सुरति यह है कि नहीं बलिहारी ॥भला०॥ दगा दै हाय जुदा भये हनि बिरह कटारी । ऐसो निठुर होत कत प्यारे तोपर तनमन वारो ॥ भला० ॥ चलत सब गरवां लगावैं जगरीत निहारी । रंगपाल नैननहीं मिलिजा प्राण जान को बारो ॥ भला० ॥ ३ ॥

फा० चौताल ।

भई जुलमी जवाल जुन्हैया तुमैं बिनप्यारे ॥ फूले बिपिनि पलास पुंज कचनार अनार कतारे ॥ मन अकुलात धीर नहिं आवत सुहिं लागत मनहुं अँगारे॥ तुमैं बिन प्यारे ॥ गुञ्जत भौंर पुञ्ज प्रति कुंजन बेधत प्राण हमारे ॥ तापर पिय पिय बोलि पपीहा

औरहु यह डारत मारे ॥ तुमैं बिन० ॥ कुसुमित सुमन समूह सुगन्धित चहुं दिसि माहँ अपारे ॥ तिनको परसि समीर परसि तन चित्र बदन देत बगारे ॥ तुमैं बिन ॥ मनमथ हियो पैन बानन ते है तुनोर करि डारे ॥ रंगपाल मुहि बेग मिलो तुम, अब चाहत चलन जियारे ॥ तुमैं बिन प्यारे ॥ ४ ॥

मन तौ ब्रजनाथ के हाथ हमार बिकानो। फैलन फाँदि मनोज फन्द जालिम जुलफन अरुझानो ॥ हारो करि उपचार हजारन! सखि सरुझत नहि बिरझानो ॥ हमार० ॥ ह्वै अपनो देखतहीं आली ह्वैगो निपट बिरानो। निज हठ ठानि अनैसो करते; अब बरबस बिकलि परानो ॥ हमार०॥ पान प्रेम रस प्यालो करि के रहत नितहि उतसानो ॥ निरखत रूप अनूप रहत रो! रस दरस सरस ललचानो ॥ हमार० ॥ मचलि मजेज रैज ह्वै बौरो लाज लेज गहि भानो ॥ रंगपाल हरि रूप सुधानिधि हेरतहूं जात हेरानै ॥ हमार बिकानो ॥ ५ ॥

जदुआरे जान हमारे तिहारे नैना प्रीतम प्यारे ॥ ढारे मदन उज्यारे तारे कारे भौंर नकारे ॥ खंजन मद भंजन मनरंजन! बिन काजर हीं कजरार ॥ तिहारे नैना० ॥ दीरघ सरस अनूप सलोने मानहुं सील अखारे ॥ डोरे अरुण फँसाय लेत मन बिनही मद के मदवारे ॥ तिहारे नैना० ॥ चंचल मीन तुरंग कुरंग न समता कौन बिचारे ॥ करत हिया बिच ऐन रसीले कोरन सो गजब गुजारे ॥ तिहारे० ॥ तिरछो चितवन पैन सैन सर जनु खरसान सुधारे ॥ रंगपाल जू झिक निहारत! बरबस घायल करि डारे ॥ तिहारे नैना० । ६ ॥

सखी रे खेलत आज किशोर किशोरी होरी रस बोरी॥ नन्द नगर के छैल छबोले बरसाने की गोरी॥ डफ मुरचङ्ग मृदङ्ग बजावत नाचत गावत सुर सो रो॥ खेलत होरी०॥ बरसत रङ्ग कनक पिचकारिन केसर कीच कियो री॥ गारि तारि दै झेलत इत उत अबिर गुलाल कीं झोरो॥ खेलत होरी रस०॥ स्यामहिं गहि रचि नारि वेष दृग दै अंजन बरजोरी॥ कहति छोहरी नन्दराय की! मेरो आजु तो दाव परो रो॥ खेलत०॥ युगल रसिक छबि रूप माधुरी लखति सखी तृण तोरी॥ रङ्गपाल तन मन वारत कहि? युग युग जीवहु यह जोरी॥ खेलत होरी रस बोरी॥ ७॥

इति होरी॥

अथ चैता घाटो।

रतिया बैरन भई रामा, चैता को, चाँदनि रे॥ रतिया॥ रङ्गपाल नहिं टरति अनैसी, अरे निंदियो सपन भइ रामा॥ ॥ चई०॥ १॥

बोले पापिहरा हो रामा, चैता को, चाँदनि में॥ रङ्गपाल बेधत हिय जाको, अरे बालम नहिं नियरा हो रामा॥चैता०॥२॥

मैलो नाहिँ भैलो हो रामा, गौना कि चुनरिया॥ मैलो०॥ रङ्गपाल परदेस चलत पिय, अरे छतियां बिहरैलो हो रामा,॥ गोना०॥ ३॥

अँखिया न अघानो हो रामा, कहँ गये, नहिँ जानी॥ ॥ अँखिया०॥ रंगपाल छन छैल दरस दै अरे करि गेलो दिवानौ हो रामा॥ कहँ गये०॥ ४॥

किञ्चिद्गति भेद।

अमवा बौराने हो रामा, माती कोयलिया ॥ रंगपाल चहुं ओर पलासन अरे सजनी कोयलिया ॥ अ० ॥ ५ ॥

जुलमी जवाल जोन्हैया, फैली रे दैया ॥ रंगपाल भइ विष बगरैया, अरे सजनि बन कुअँर कन्हैया ॥ फैली० ॥ ६ ॥

अन्यच्च।

फुलवा बिनन गैली बगिया हो रामा आजु भोरवां। सुमन सुगन्ध भौंर कोकिल सुर छाय रहे रह्यो चहुँ ओरवां हो रामा० ॥ निरखत छवि मन योहीं हमारो परि गयो मैन हिलोरवां हो रामा० ॥ रङ्गपाल मन लैगो साँवरो निरखि नयन के कोरवां हो रामा ॥ आजु भोरवां ॥ १ ॥

मोरी अँखिया में समानी हो रामा सँवली सुरतिया ॥ ने सुक झलक दिखाय हरे हँसी; करि गयो हमको दिवानी हो रामा ॥ कैसी करूँ पल काल नहिं आवत; अँखिया से निदियो हेरानी हो रामा ॥ स० ॥ रंगपाल यह अहित अनैसी, जारन जोग जवानी हो रामा ॥ सवलीसु० ॥ २ ॥

पुनः।

फूलि रहीं द्रुम बेली हो रामा; आयो चइतवा ॥ जारति जिअरा जोन्हैया रे दैया; कानि उपैया सहेली हो रामा ॥ आयो० ॥ छाय जाय पिय छाये बिदेसवां; हमको छोड़ि अकेली हो रामा ॥ आयो० ॥ रंगपाल अब जिय कैसे राखौं, लागी बिरह को सेली हो रामा ॥ आयो चइतवा ॥ ३ ॥

हमरी बलम सुधि छोड़ो हो रामा, छाये बिदेसवा ॥ अब केहि भांति धीर जिय धारौं, बाजो बसन्त कि डौंड़ो हो रामा, छाये० ॥ मेरे जान परि बिरह अगिन मैं, जरि गइ निंदिया नि-गोड़ी हो रामा० ॥ रंगपाल मन ऐसो बसो हुतो नाहक सनेहिया तो जोड़ी हो रामा ॥ छाये० ॥ ४ ॥

फैलो जवाल जुन्हैया हो रामा, मोरे अँगनवाँ ॥ कैसो कहर यह नेक निहारत, तन मन दाह दगनवाँ हो रामा ॥ मोरे० ॥ उन बिन हाय छला छिगुनी को; अब भये करकी कँगनवाँ हो रामा ॥ ॥मोरे अँ०॥ रंगपाल पिय ल्याय मिलावे लागिये काके पइनवां हो रामा ॥ मोरे अँगनवाँ ॥ फैलो० ॥ ५ ॥

तलफत बिनरे पियरवा हो रामा भैलो पियरी ॥ बिष बेदन बगरावति बेरन रतियां उजेरिया मनियरी ॥ हो रामा भैलो० ॥ बिरह अगिनियाँ तपित यह छतिया; है है भला कबौं सियरी ? ॥ हो० ॥ रंगपाल पपिहा यह औरहु मारत कहि पिय पिय री ॥ हो रामा भैलो पि० ॥ ६ ॥

॥ इति चैता० ॥

अथ पांवस के पद ।

झूलन ।

तिताला ।

चलिये छबि देखन आली ॥ झूलत यमुना तीर हिंडोरे; श्री-राधा बन माली ॥ मर्कत मय पटुली छड़ लालं; बिराजित खम्भ प्रवालं बिसाल, जड़े बहु भांतिन के नग जाल, प्रभा बगराय नि-

रालो ॥ कलस अशो मणि दीप्ति निधान; रजैं रजनी रुचि दण्ड महान, मनोहर जरकस तान बितान लुरैं चहुवां मुकतालो ॥ सुरङ्ग अनेक भांति पताक कि पाँति, सदा गति झूकन सों फहराति, हरै मन यों समता लहराति, मनो सरिता सुरवालो ॥ मंजुलता बर बेलिन कुंज; छाया मधुमत्त मधुव्रत गुंज; खिले बहु भांति घने-द्रुम पुंज; रही झुकि भूमि सुहालो ॥ घेरि घने बरसैं घन घोर; दमङ्कति दामिनियां चहुँ ओर; मयूरिन चूमि नचैं करि शोर;भरे मन मोर बहालो ॥ भूषण लाल मणीन सुढङ्ग, सजे पट सुरभित नील सुरंग; सकै सुखमा कहि को प्रति अङ्ग जगी अनुराग कि-लालो ॥ रङ्गपाल सखिया समुदाय, लखैं तृण तोरि हिये हर-षाय; बजाय सु बाजन सावन गाय; झुलावति झोंक रसालो ॥ चलिये छवि देखन आलो ॥ १ ॥

बरसैं बादरवा कारे ॥ चूमि मुरैलिन के ओरवा, निरतैं मोरवा मतवारे ॥ खम्भ सुढार प्रवाल दराज, मणी गण चित्र विचित्र बिराज, हरै मनको पटुली पुखराज, छड़े परचङ्ग सँवारे ॥ नीलम भौंर सुबेलन लाल, अशो मणि मण्डित कलसरसाल, लुरैं चहुंवाँ मु-कताहल माल, लखैं छवि ज्यों शशिनारे ॥ जर्कस तान बितान सु-ढङ्ग, जगामग दण्ड मणीन सुरंग, रहे फहराय पताक उतङ्ग, लजैं बकमाल निहारे ॥ झूलत राधा स्याम सुहात, सुगन्ध चहूँ दिसि मैं सरसात, हिंडोरे अनुपम आवत जात, महा छवि देत बगारे ॥ गाय बजाय झुलावहिँ मन्द, लखैं सुखमा सखि पूरि अनन्द, उतै कहि जय जय आनँद कन्द, झरैं सुर फूल अपारे । रंगपाल बलि प्रेम उ-मंग; जिवैं युग चारहुँ श्री सुख संग, सुजीवन प्राण हमारे ॥ ब-रसैं बादरवा ॥ २ ॥

तोहि पां परि स्याम मनावैं। उठि उठि चलि सब कालिन्दो तट, हरषि हिंडोर मचावैं ॥ मोरवा चहुं ओरवा सरसावैं, छन छन रुचि छवि छहरावैं, बरसत कछु कछु गरजि सुनावैं, घोरे धुरवा धावैं । विरमन करि अनुराग रचावैं, रंगपाल बलि बलि जावैं, हिलि मिलि सुखप्रद सावन गावैं, झूल हिंडोर झौर झुलावैं ॥ तोहि पाँ परि० ॥ ३ ॥

पुनः।

सखि बादरवा घिरि आये॥ छहराय रहो चष जोन्ह छटा मुरवा बन ओर मचाये। लहरें लहरावति सूर सुता, सुंदरी भुवि बीर बधून जुता, थहरें लहि पौन प्रसंगलता, पपिहा पिय पौय सुनाये ॥ धनुवा सब रंगजूपाल लसे, नभ मैं बकवृन्द चहूं दरसे, चलि झूलन के हित पा परसैं, तुमको घनस्याम बुलाये ॥ सखि बादरवा घिरि० ॥ ४ ॥

श्रीवृन्दावन रंग हिंडोरे झूलत राधा स्याम आलो ॥ आनन अलक झलक मन ललकत, अहिसुत मनहुं चन्दपर ललकत, हलकत मोती दाम, आली॥ गावहिं झमकि झुलावहिं गोरी, निरखहिं रसबोरी दृग तोरी, जोरी सोभाधाम आली ॥ रंगपाल निज मनहिं बिचारत, तीन लोक समता न निहारत, बलिहारत रति काम, आली ॥ श्रीवृन्दावन रंग० ॥ ५ ॥

आलोरि-!!! रसबोरे रतन हिंडोरे, झूलत राधा स्याम ॥ कोउ सखि मन्द झुलावति, गावति कोउ बाजने बजावति, आनन्द आठो याम ॥ कहति कोउ परमानु राग सो, युग युग जियो सु-

हाग भाग सो, जोरी यह अभिराम ॥ रंगपाल त्रण तोरि नि-हारत, हरषि हिये तन मन युत वारत, कोटि कोटि रति काम ॥ आलोकि० ॥ ६ ॥

झंझौटी ति०।

हिँडोरे झूलिये आली ॥ चलि वृन्दाबन तुमैं बुलावत, बलि गई बनमाली ॥ सुमन सुगन्ध सरस शुभ भारन झुकि रहिं द्रुम डाली ॥ नाचत मत्त मयूर शोर करि गुञ्जत मधुपाली ॥ बरसति मन्द फुही अमहारी, घेरि घटा काली ॥ रङ्गपाल सुखप्रद बहार वर, यह सावनवाली ॥ हिंडोरे। ७ ॥

सखी यह ऋतु रूसन की नाहिँ। चलि झूलन झूलिये लाल संग श्रीवृन्दावन माहिं ॥ तो तजि और युवति को मोहन, छुवै न सकत कहुं छाहिं ॥ रंगपाल तरसैबो तेहि क्यौं, बनि आवत तुहि पाहिं ॥ सखी यह० ॥ ८ ।

झूलिये हिलि मिलि झमकि हिंडोर ॥ आयो सावन मास सुहावन, गावन लागे मोर ॥ बरसति घेरि घटा दामिनियां द-मकति चारहु ओर ॥ रंगपाल तरसावति स्यामहिं कैसो हियो है तोर ॥ झूलिये० ॥ ९ ॥

झूला झूलने चली ॥ श्रीवृषभानुलली ॥ झूला० ॥ साजि सिँ-गार साथ सखियन के तन मन प्रेम पली ॥ रंगपाल हरि भाग भलाई को कहि सकत अली ॥ १० ॥

झमकि झुकि झूल रहे दोउ आज ॥ श्रीराधे ब्रजराज ॥ झ-मकि० ॥ यमुनापुलिन हरित त्रण सङ्कुल इन्दुवधू गण भ्राज ॥

निरतत मत्त मयूर कूकि कल कुसुमित विटप समाज ॥ कलित कनक मणिमय कदम्ब तर रुचिर हिंडोरो साज ॥ इत उत सखो झुलावहिँ गावहिँ लखि सुर तिय गहि लाज ॥ बरैत न पलक झलक लखि सजनी ललकत रति रतिराज ॥ रंगपाल तन मन धन वारत छबियुत रस सिरताज ॥ झमकि० ॥ ११ ॥

आली दोउ रसिक झमकि झूलैं ॥ झूलन रस मूलैं ॥आलि०॥ घहरत घन निरतत मयूर नदि कालिन्दी कूलैं ॥ रंगपाल छबि निरखि हरषि सखि मेटहिं सब सूलैं ॥ १२ ॥

आली घन उमड़ि घुमड़ि छाये ॥ रिम झिम झरि लाये ॥ आली० ॥ दमकति दामिनि मुदित मोर गन ग्रोरनि सरसाये ॥ कुसुमित मञ्जु लता द्रुम सुरभित मारुत लहराये ॥ श्रीराधा माधव वृन्दावन बन आनंद अधिकाये ॥ झूलत रत्न हिँडोर झमकि रस प्रेम सु बरसाये ॥ इत उत सखो झुलावहिँ गावहिँ सावन मन भाये ॥ रंगपाल अनिमिष लखहिं छबि तन सुधि बिसराये ॥ आली घन० ॥ १३ ॥

मणिमय दुति धाम ललाम हिंडोर सु झूलत राधा स्याम सखी ॥ बलि गोरी सांवरि जोरी मनोहर वारनै हैं रति काम सखी ॥ अलिपूरित प्रेम झुलावति गावति आनंद आठो याम सखी ॥ जिन रंगजूपाल निहारे नहीं तिनकी अँखिया केहि काम सखी ॥ मणिमय० ॥ १४ ॥

झपताला।

झूलत कालिन्दी किनारे प्रिया प्राणप्यारे हिँडोरे ॥ झोंको बहँसि देत लरजति डरा खाति सिसकति सु ना कहि सकोरे ॥

बरजति मृदुल बैन बरजति हगन सैन छपटति सु घनस्याम कोरे॥ बलि रँगजूपाल ढिग मोरगण नाचत छटा मेघ भोरे॥ प्रिया प्राण प्यारे हिँडोरे० ॥ १५ ॥

रूपक ताल।

झूलत राधिका अरु स्याम। यमुन तीर हिँडोरे मणिमय, परम सोभा धाम॥ तोरि तृण अनिमेष सखिजन, लखहिँ छवि अभिराम॥ रङ्गपाल जु सकुचि वारे, कोटि रति अरु काम॥ १६॥

ति०।

हिँडोरे चली झूलन प्यारी॥ भूषण सकल सुदेस बेस लसि साजि सुरँग सारी॥ पूरित प्रेम रूप सखिया लखि ह्वै गईँ बलिहारी॥ रंगपाल को भाग सराहै रामरसिक वारी॥ हिँडोरे चली०॥ १७॥

पुन:।

घहरैं घिरि बादर कारे॥ मन्दहि मन्द फुही अमहारि, झरैं जनु फैलि फुहारे॥ विज्जु दमङ्कति चारहुँ ओर, झिल्ली झनकारत ठौरनि ठौर, सिखी मदमत्त नचैं करि शोर, पपीहन जूह पुकारे॥ कानन श्रीसरयूसरिकूल, हिडोरे झूलत आनँद मूल, सिया रघुनन्दन सोभ अतूल, बनै बलि आजु निहारे॥ रंगपाल उत्साह अभङ्ग, कहो लखि पावन प्रेम उमंग, जिहैं युग चारहु श्री सुख संग, सु जीवन प्राण हमारे॥ घहरैं०॥ १८॥

सजनी छवि आज किँ देखी॥ ये अँखियां अनिमेष भईं, तनहूं मन भूलि सरेखी॥ श्रीसरयूसरितातट मंजु, कुसुमित का-

मन कुंजन पुंज, करैं मधु मत्त मधु व्रत गुञ्ज, नचैं सिखि वारिद पेखो ॥ झूलत रामसिया छवि धाम, हिंडोर महा मणि मय अभिराम, सजे पट भूषण अंग ललाम, लजैं रति काम विसेषो ॥ रंगपाल उपमा नहि पाय, लखैं तृण तोरि हिये हरजाय, झुलावहिं सावन गाय बजाय, सखी धनि आपुहि लेखो ॥ १९ ॥

चलिये उतको चलिये जू ॥ हे मिथिलेश ललौ बहार यह, झूलन को भलिये जू ॥ कुसुमित वन प्रमोद अभिराम, अजापि नचैं सिखि ठामनि ठाम, लखैं पयरा उर श्रीघनस्याम, सु रङ्ग रली रलिये जू ॥ मन्द फुही बरसैं घन घेरि, रहे चहुं ओर पपीहन टेरि, विनय बलि रंगपाल सुनि मेरि, सु प्रेम रसे पलिये जू ॥

दोउ झूलत रंग हिंडोरे ॥ श्री मिथिलेश ललौ रघुनन्दन, प्रेम सुधारस बोरे ॥ दउ० ॥ कुरविन्द के सुन्दर खंभ गड़े, पटुली कड़ कञ्चन मोल बड़े, बहु भातिन के नग जाल जड़े, दुति दौरि हरै मन को रे ॥ सुवितान जगामग ज्योति जगी, मणि मरकत दण्ड सुरंग धगी, गज मौतिन भालर चारु लगी, फहरैं ध्वज पौन झकोरे ॥ बरसै घिरि मन्दहि मन्द घटा, छहराय रही घण जोन्हछटा, जनु फिरत बीच मनोज पटा, सिखि शोर करैं चहुं ओरे ॥ रंगपाल रस प्रेम पगी, निरखैं छवि लेवहिं भाग भलो, सब आनँद सिंधु हिलोरे ॥ दोउ शुभ गाय झुलाय सु लेहिँ अलो, झूलत रंग० ॥ २१ ॥

आली झूलत सीताराम परस्पर दोऊ चित के चोर, आली ॥ श्री सरयू सरिता तट पावन, कुसुमित विपिन प्रमोद सुहावन बोलत माते मोर, आली ॥ छण छण छहरति छलकि छटारी,

बरति मन्द फुही भ्रम छाही, घेरि घटा चहुं ओर, आली ॥ रंगपाल छबि लखि सुख पावहिँ इत उत सखी झुलावहिँ गावहिं, फहरत पट की छोर, आली ॥ २२ ॥

झूलैं हो-!!! रस बोर रतन हिँडोरे, सिय रघुनंदन आज हो० ॥ कुसुमित बन प्रमोद छबि छावन, पावन सावन मास-सुहावन, साजे अनुपम साज ॥ किहि पटतरिये तिहुंपुर मांही, छू न सकत नेकहुं छबि छाहीं, कोटिन रति रति राज आली ॥ अनिमिष नइ नइ छबि छिन छिन की, रंगपाल जिन लखी न तिन की, कहु अँखिया केहि काज ॥ २३ ॥

सखि बन प्रमोद अभिराम, रामसिय झूलैं हो ॥ सखिजन मन्दहिं मन्द झुलावहिं, मधुर मधुर सुर गीतनि गावहिं, कलरव बंसी बीन, रंच नहिँ, तूलैं हो । जोरी सुन्दर साँवरि गोरी, तिहुंपुर कोउ नहिं उपमा कोरी, कोटिन्ह रति अरु काम, निरखि छबि, भूलैं हो ॥ रंगपाल सुख सिन्धु हिलोरत, देहिं दुन्दुभी दोह बरषि सुर, फूलैं हो ॥ सखि० ॥ २४ ॥

बिन दाम गई बिकि हेरतहीं, सखि आज अनोखो झूलन री। झूलत प्रमोदबन रामसिया, सजि अंग सुरंग दुकूलन री ॥ घहरैं घन आते मोर शोर करि नाचत सरयू कूलन री ॥ बलि रंगपाल सखि गाय बजाय, झुलावति मोद अतूलन री ॥ २५ ॥

झपताला ।

सरयू पुलिन दोउ झूलैं प्रिया प्राणप्यारे सखी रे ॥ घहरति घटा घोर छहरति छटा मोर नाचत पपीहन पुकारे ॥ प्रिया० ॥

बेसन भवँर छड़ पटुलि खम्भ जुत दण्ड मणि गण जटित स्वण वारे। जरकस बितेनह लगी डोर पचरंग झालर मुकुत जनु सतारे॥ आवतह जातहु अधीर धहिं डोरी, छटा देत अनुपम बगारे। पिचकी मचत त्यों त्यों सिसकीन लेले, अमी धारसी देति ढारे॥ फहरात पट छोर छपटति सु पिय ओर समतान आवति विचारे॥ श्रीरंगपालहु अली छन्द छण तोरि निरखैं नि मेषैं बिसारे प्रिया प्राण प्यारे०॥ २६॥

तिताला।

आली सियरघुनन्दन झूलैं॥ रतनहिँडोल कोटि रति रति-पति, नहिं छिन छबि तूलैं॥ बरसत झर झर सलिल घेरि घन समयो अनुकूलैं॥ हरित भूमि निरतत मयूर नदि, सरि सरज कूलैं॥ सुमन सुगन्ध भार द्रुमबेलो, झुकि डरिया झूलैं॥ बन प्र-मोद नन्दन की भोरे सुर समूह भूलैं॥ इत उत सखी झुलावहिँ गावहिं सावन सुख भूलैं॥ रंगपाल छबि निरखि हरषि हिय, मेटहिं सब सूलैं॥ आली०॥ २७॥

पुनः।

गड़ी सखि सरजूतीर हिँडोर॥ झूलत श्रीमिथिलेशललो अरु श्री अवधेशकिशोर। रिम झिम बरसत मन्द गरजि घन बन बन बोलत मोर॥ झिल्लीगण दादुर धुनि मण्डित सीतल पौन झकोर। तनो बितान जरकसी झालर मुकतन की चहुँ ओर॥ बिबिधि बरण फहरत पताक जनु सुरतिय अंचल छोर। पटुली पदिक खम्भ मणि गुंफित लागो पचरँग डोर॥ इत उत

सखी झुलावहिं गावहिं आनंद उमंग अथोर॥ मांचौ झनक मनक भूषण की सहज सुगन्ध हलोर॥ रङ्गपाल छबि लखि मन वारत रति अरु काम करोर॥ गड़ो सखि सरयूतीर हिंडोर॥ २८॥

लावनी।

दोउ झूलत रंग हिंडोर, सखी सावन में॥ सियराम रसिकसिरमौर, सखी सावन में। बरसत नभ घिरि घन घोर, सखी सावन में॥ लखि नचत मोर करि शोर, सखी सावन में। कछु देत झोक झकझोर, सखी सावन में॥ सिसकति छपटै पिय कोर, सखी सावन में। सरसात सुगन्ध झकोर, सखी सावन में॥ मंडरात मत्तगन भौंर, सखी सावन में॥ मुस्कात छटा चहुँओर, सखी सावन में। फहरात सुरँग पट छोर, सखी सावन में॥ अवलोकि नैन के कोर, सखी सावन में। दोउ छँगे चन्द चकोर, सखी सावन में॥ लखि रङ्गपाल रसबोर, सखी सावन में। वारै रति काम करोर, सखी सावन में॥ २९॥

तिताला।

झूलन गैलो हो राम रसिया हिंडोरवां॥ झू०॥ बरबस मन अपनाय लियो अब, आवत नहिँ यहि ओरवां॥ रूप माधुरी चसक चोपि चित, बोरयो हँसि रस बोरवां॥ रङ्गपाल जदुआ सिर डार्यो, निरखि नयन की कोरवां॥ झू०। ३०॥

अन्यगति तथा अन्य विषय के वर्षाऋतु के पद।

कैसे आऊँ चुनरिया भीजै॥ घन बुंदियन रह्यो मेह बरसि, कैसे आऊँ०॥ निसि कारी दामिनी दमकै, रङ्गपाल जुगनू चमकै, हाय हिया रह्यो तरसि तरसि॥ कैसे आऊँ०॥ ३१॥

अन्यञ्च।

छाई कारी कारी घटा री मन भाई रे॥ रमकि झमकि बुंदन झरि लाई। छाई०॥ लगहि पिया के गल, हठहि अनोखि॰ तज, नांचें, रीचें, मोरा रे, कल गावें, मन भावें, हरषावें, लख रङ्गपाल, चपला चमकाई॥ छाई कारी कारी०॥ ३२॥

छन छटा छहरि रही प्यारी आज॥ अति घहरि घहरि घन घोर घटा री, घिसि घिसि जाति अटारि आज॥ छन०॥ निसि अँधियारी मोर शोर चहुँ, पट बीजन चमकावन रे, सखि रङ्गपाल रूसो न तिहारी, बलिहारी बलिहारी आज॥ ३३॥

उमड़ि बादरवा ऐलो रे॥ चहुं दामिनियां रहि दमकि दमकि चमकि चमकि जुगुनुवां, अब करूं कौन यतन, बिरहानल हियरा झरसै॥ उमड़ि०॥ नागिनियां यह कारी रैन, छन कल ना परत मोहिं सूनि सेज पर, मोरन शोर करन लागी। हरत चयन पिय पिय कहि पपिहा, स्याम बिना, सखि रङ्गपाल मोर जियरा तरसै॥ उमड़ि बदरवा०॥ ३४॥

'बदरवा, छाय सजनी॥ बिरही जनके जिय जारन कारन, आये मदन बिरादरवा॥ सखि मेरे जान पान पठये, आपहि मनमथ सादरवा॥ रङ्गपाल गिरिधरलाल बिन, हाय किये मोहिं कादरवा॥ छाय स०॥ ३५॥

अहो घन मानत क्यों बरजो ना॥ जीवनदायक है बिरहिन को नाहक हो तरजो ना॥ हाहा पा-लागियत तिहारी और कछू अरजो ना। रङ्गपाल हरि बसे मधुपुरी तितहीं क्यों गरजो ना॥ ३६॥

सखोरी अब घन बरसि रह्यो ॥ बिज्जु बलित झुकि झूमि अटरियां मानहुं परसि रह्यो ॥ चहुं ओरवां मातै मोर बन को ओरवी सरसि रह्यो ॥ रङ्गपाल मोर हाय बलम बिन जियरा तरसि रह्यो ॥ स० ॥ ३७ ॥

सखो रे घहरति घोर घटा ॥ बरसति बुन्द बाण ज्यौं बैरन घिसि घिसि जाति अटा ॥ छहरति छटा मनोज बहादुर फेरत मनहुँ पटा ॥ रङ्गपाल बिन पोय हियरवा चाहत हाय फटा ॥ सखीरे० ॥ ३८ ॥

बरसत उमड़ि घुमड़ि घन कारे ॥ छहरति चण रुचि छटा पपोहा पिय २ हाय पुकारे ॥ मेरेहि महल मुडेरे कूकत नाचि मोर दइ मारे ॥ रङ्गपाल बिन प्राण पियारे छतियां होति दरा ॥

मिले सुहिं बिछुरे प्रोतम आज ॥ धनि धनि भाग सुहाग हमारे बिधि अनुकूल बिराज ॥ भरि २ थारिन, धरि मुकता मणि रसिक निछावर काज ॥ अब बिलम्ब नहि नेक करिय सखो साजहु झूलन साज ॥ बरसति घटा सावनी रिम झिम बोलत मोर समाज ॥ रङ्गपाल पिय अङ्क झूलि सब मेटिय कसक दराजै ॥ मिले० ॥ ४० ॥

पुनः झूलन।

हिंडोरवा झूलन चलिये यार ॥ आई मनभावन मुद छावन सावनवां कि बहार। कारो घटा अटा तट उनई रिम झिम परत फुहार ॥ रंगपाल मोरवा चहुँ ओरवां ओरवा करत अपार ॥ ४१ ॥

झूलत भींजि रहे पिय प्यारी ॥ वै हँसि ओट करत पटुको

ले यें ले चूँदरिया री । निचुरत रंग सुरंग सलोनो अलिजन मुदित निहारी ॥ उमगि चलो अनुराग जुगलजनु रंगपाल ब-लिहारी ॥ ४२ ॥

झूलें सांझ समय दोउ आये ॥ प्रीतम प्रिया दिये गलबाहीं उर आनद अधिकाये ॥ हरित हरित द्रुम बेलि सुहावन बहु बिधि सुमन सुहाये ॥ घन अरुणई बलित चहुं ओरन मोरन शोर मचाये ॥ गाय मलार बजाय बाजने सखिजन हरषि झुलाये ॥ रङ्गपाल अनुपम निहारि छबि जीवन को फल पाये ॥ ४३ ॥

भोरहीं झूलि रहे दोउ आज ॥ मणिमय कनक हिँडोर उ-मामग भूषण बसन बिराज ॥ सीतल सुरभि पवन पूरित चहुं बि-हँग अवाज दराज ॥ सखिजन मुदित झुलावहिँ गावहिँ बिबिधि बजावहिँ बाज ॥ लखि छबि छटा प्रिया प्रीतम की लाजहिँ रति रतिराज ॥ रङ्गपाल आनन्द उमगि कहि जयति रसिक सिरताज ॥ भोरहीं ॥ ४४ ॥

पुनः।

हिँडोरवां चलि सखि झमकि झुलैये ॥ पिय प्यारी छबि लखि अँखिया भरि आनँद उदधि अन्हैये। बाजन बिबिधि ब-जाय सुहावन मेघ मलारहि गैये ॥ रंगपाल यह समय सुहावन सखि बड़भागन पैये ॥ हिँ० ॥ ४५ ॥

झूलिये चलि रङ्ग हिंडोरवां । घन दामिन छबि छीनि छ-बीली झलकि झपटि घनस्यामके कोरवीं ॥ चूमि सुरेलिन सखि ओरवा करि नाचि रहे मोरवा चहुंओरवां। रङ्गपाल लावन

नहिँ काको बोरत मनहिँ रङ्गरस बोरवां ॥ झूलिये चलि० ॥४६॥

सखो तुमैं श्याम बुलावैं हो, झूलनके हेत बलि बलि जावैं ॥ तुमैं श्याम० ॥ रूसें कोउ यहि छन कामिनियां, निरखो कसि दमकति दामिनियां, घहरैं नभ मराडल घन धावैं, झिमझिम बरसावैं हो ॥ सखो तुमैं० ॥ छायी झिल्लोगन झनकारैं, झुकि झूमति कुसुमित द्रुम डारैं, मुख चूमि मुरैलिन हरषावैं, मोरवा चहुं गावैं हो ॥ सखो तुमैं० ॥ बलि रङ्गपाल भलि चूक नहीं, नातरु जैहै यह हूक नहीं, सावन बहार दिन मन भावैं बड़े भागन आवैं हो ॥ सखो तुमैं श्याम बुलावैं हो ॥ ४७ ॥

प्यारी हो ! प्यारे सँग रतन हिँडोरे, झूलन चलिये बाग ॥ प्यारी हो० ॥ घहरति घटा छटा छहरति बन बोलत मोर सुहावन रंगपाल यह सावन उपजावन अनुराग ॥ प्यारी हो ॥ ४८॥

प्यारी रङ्ग हिँडोरवां झुलन चलो हो ॥ आयो मास सावन, सनेह सरसावन, गावन लागी हो, सुनो मोर चारो ओरवां ॥ झुलन० ॥ छटा छहरावन, सुरस बरसावन, धावन लागी हो, लखो नभ घन घोरवां ॥ झूलन० ॥ रङ्गपाल फूले बन, सरस सुहावन, आवन लागी हो, कैसो पौन रस बोरवां ॥ झुलन चलौ हो ॥ ४९ ॥

राग परज ।

का तरसो तरसाओ सुहावन सावन आयो ॥ मान ! जान दे मान विनय अब प्रेम सुरस बरसाओ ॥ लेति बलाय गई बलि प्यारी आतुर साज बनाओ ॥ रङ्गपाल पिय सङ्ग हिँडोरे झूलहु और झुलाओ ॥ सुहावन० ॥ ५० ॥

झिँझौटी।

हिंडोरे चलो झुलन प्यारी ॥ हाहा बलिहारी ॥ हिंडोरे० ॥ आई सावन की बहार रस उपजावनवारी ॥ लपटो तरुन लता लहरैलो कुसुमित बनवारी ॥ बूड़नहु अनुराग रम्यो जल उमगि भजत नारी ॥ चूमिं मयूरिन नाचि मत्त सिखि शोर करत भारी ॥ रंगपाल विज्जु,स्याम घन अङ्क छटा निज छहरावति न्यारी ॥ पिय पीय पपीहा टेरत चहुंवारी ॥ हिंडोरे चलो झुलन० ५१ ॥

पुनः।

सुनो सखि गावत बन मोरवा ॥ झूलो प्यारे बङ्क हिंडोरवाँ छाये घन घोरवा। झिल्लोगन दादुर सुर मंडित चहुं पपिहा शोरवा। ॥ रंगपाल आयो मन भायो सावन रसबोरवा ॥ ५२ ॥

पुनः।

घहरि घिरि आये घन घोरवां । छन छन छहरति छलकि छटा छवि बोलत बन मोरवां ॥ झिल्लोगण झनकार पुकारत पपिहा चहुं ओरवां। रङ्गपाल सुख लूटहु सजनो झपटि छयल कोरवां ॥ ५३ ॥

घहरि घिरि आइ घटा घन घोर। दमकति दुरति दामिनी छन छन बन बन बोलत मोर॥ ऐसे समय कसो सजनो हाहा बलि २ तोर। रङ्गपाल मनभावन के सँग झूलहु झमकि हिंडोर ॥ ५४ ॥

सखो अब गावन लागी मोर। आयो सावन मास सुहावन घेरत छन चहुं ओर ॥ फूले बकुल कदम्ब कुंजबन सीतल पवन

झकोर ॥ रंगपाल पिय संग उमंगन झूलहु झमकि हिँडोर ॥ सखी० ॥ ५५ ॥

सखोरी बादरवा छावे । छन छन गरजत मधुर मधुर धुनि घन बुंदियन झरि लावे ॥ झंझा पवन चलत चहुं ओरवां मोरवा शोर मचावे । रङ्गपाल सखि प्राणपिया को पैहो का तरसावे ॥ ५६ ॥

बदरवा मतवारे झूमैं ॥ बलित बिज्जु गरजत बरषत झुकि चहत मनहुँ महि चूमैं ॥ धुरवारे धौरे कजरारे घूमैं चहुँदिसि छूमैं । रंगपाल ध्वज नृप अनंगके जनु उतंग नभ छूमैं ॥ बद०॥५७॥

अलि घन उमड़ि घुमड़ि बरसैं । कुसुमित द्रुम डरिया झुकि झूमति बरबस मन करसैं । दमकति दुरति दामिनी छन २ मोर शोर सरसैं ॥ बरसैं २ वारो बहार दिन बड़ भागन दरसैं ॥ झूलौ पिय सँग हरषि हिंडोरे हाहा पग परसैं ॥ बलि गई सखिया जनकी अँखिया देखन को तरसैं ॥ तेरी सौं तुमको रूठी सुनि सखि सौते हरसैं ॥ रंगपाल तो बिन कान्हर को निमिष जात बरसैं ॥ ५८ ॥

हिंडोरवाँ कसि कसि झोकवन देत ॥ जानि गई डरपाय याहि मिस उर लपटावन हेत ॥ को झूलैं तो सँग बलि बेरिया जाहिर छद्म निकेत ॥ रंगपाल इत मोहिं मनावत उत दुरि मुरि हँसि लेत ॥ हिंडोरवाँ० ॥ ५९ ॥

रूपक० ।

तो सँग कौन झूलन जाय ॥ देत नाहिँ सँभारि झोंको जाति

कटि बल खाय ॥ डरति करति इहा न उत कछु दरद बूझत हाय ॥ रङ्गपाल न सौहँ करिये अब पछ्याय बलाय ॥ ६० ॥

झपताला वा यतिताल ।

हिंडोरे चलो झूलने प्राण प्यारी ॥ घहरती घनेरी घटा घेरि कारी ॥ बिभूषन सजे लाल की लाल सारी, हिये लाल के दर्श की लाल सारी ॥ बिडारैं लिये चौंर भौंरालि भारी, सखी सङ्ग ज्यों सांच मैं काम ढारी ॥ घनी फैलती लालिमा पाय वारी, सुमुस्क्यान की मञ्जु तापे छटारी ॥ भली मखमली फर्श पै मोद कारी, मनो देत गेरे प्रभा चन्द्रिकारी ॥ लगी पाय के हीय प्रेमै पसारी, मिली स्याम मेघे मनो चंचलारी ॥ सखी रंगपाल जू सानन्द सारी, भुलाये हरे गाय मेघे मलारी ॥ हिडारे० ॥ ६१ ॥

झपताला ।

झूलत प्रिया प्राणप्यारे सखी आज रङ्गमंदिर मैं ॥ जगमग जगति जोति मणि मय हिंडोरे कि लाजहि गहत ग्रह सितारे ॥ भूषण पदुम राग साजैं सुरङ्ग बास अनुराग रंग धारैं ॥ झोंकों बिहँसित देत ससकति इहा खाय हटकति नयन के इशारे ॥ ज्यों को रहो त्यौं को सो सखी सर्व निरखति निमेषै बिसारे ॥ औ सरङ्गपालहु सुमनयुत अरब खर्ब रति अरु मदन वारी डारे ॥ सखी आज रंगमन्दिर मैं० ॥ ६२ ॥

॥ तिताला ॥

गरजत मन्द मन्द घन घेरे ॥ बरसत झर झर सलिल दामिनो दमकि रही चहुं फेरे । झिल्लीगन दादुर धुनि पूरित पिय पिय

पपिहन टेरे । मत्त मुरैलिन मध्य मोर नचि कूकत धाम मुड़ेरे। झूलत मुदित प्रिया प्रीतम दोउ मणिमय मन्दिर मेरे ॥ साजे अङ्ग सुरङ्ग बसनवर भूषण फूलन केरे। पटुलो पदिक प्रवाल खम्भ मणिमय बहु चित्र उकेरे ॥ मरकत मौर लालमणि बालन छड़ पचरंग लगेरे । शशिमणि कलश मुकुत झालर युग चन्द नखत जनु घेरे ॥ अलि मड़राहिँ सहज सौरभ लहि देति चँवर अलि फेरे। गाय बजाय झुलाय सखी छवि लखहिं निमिष बिनु गेरे॥ रंगपाल वारत रति कामहिं उपमा मिलति न हेरे ॥६३॥

॥ अन्य गति ॥

हिँडोरे झूलत पिय प्यारी ॥ परस्पर छवि लखि बलिहारी। मधुर धुनि गरजि, घटा कारी । झरति लघु बूंदन अमहारी। दमङ्कति दामिनियां न्यारी। कुलाहल करत मोर भारी ॥ दादुर धुनि मण्डित चहूं, झिल्लीगण झनकार। बैहर झूकन लहरती, कुसुमित लता कतार॥ रही झुकि झूमि सु द्रुम डारी । हरित पट भूषण अँगधारी । प्रेम रस पूरि सखी सारी । झुलावति झौंकन रसवारी । तोरि तृण लखहिं निमिष टारी ॥ बाजन विविध बजावहीं, गावहिं मेघ मलार। रंगपाल क्यों कहि सकैं, आनँद उमग अपार॥ निछावर तन मन करि डारी॥ ६४॥

॥ अन्यच्च ॥

पिय प्यारी झूलैं आज री। मणिगन मंडित कनक हिंडोरे साजे अनुपम साज री॥ जिन अनिमेष लखी नहिं तिनकी सखि अँखिया केहि काज री । रङ्गपाल छवि पर बलिहारी कोटिन रति रतिराज री॥ ६५॥

छैल हो झोंका देहु सँभारि। तुमरी तो हिये दरद न आवत सिसकति है सुकुमारि ॥ दुनई पाति लङ्क पतिखोनो लोजत क्यों न निहारि। रङ्गपाल मानत नहिं छतिया धक धक होति हमारि ॥ ६६ ॥

राग बिहाग ति०।

हो झूलत रंग हिंडोरे। दोउ प्रीतम प्यारो रूप उज्यारो प्रेमसुधा रस बोरे ॥ रङ्गपाल बरसैं बादरवा शोर करत मुरवा हुं ओरवां लेहिं अली लखि आनँद सिन्धु हिलोरे ॥ हो० ॥६७॥

अन्य।

झुलावत मोहिँ पिय बस करिलीन। कछु जदुषा करि दोन ॥ झु० ॥ परत निमिष होत जिय व्याकुल जैसे जल बिन मीन ॥ रङ्गपाल बिनदाम बिकानो सब विधि भई अधीन ॥ ६८ ॥

सखी री दमकति दामिनियां। रिमझिम बरसति घहरि घटारी कारी यामिनियां ॥ स० ॥ झूलति हैं पिय सङ्ग हिंडोरे हिलिमिलि भामिनियां। रङ्गपाल तुहिं रूसनहारो नोखो कामिनियां ॥ ६९ ॥

झपताला।

घहरि घन घोर चहुं ओर धावन लागे। छनहिं छिन छन छटा हरि घन कोर सघन वन मत्तगन मोर गावन लागे॥ हरित द्रुम बेलि जगमगि तजो गन जोति पपिहा सुनहु पिय पिय सुनावन लागे। रङ्गपाल पिय सङ्ग झूलो झमकि हाय रूसे काज मास सावन लगे ॥ घहरि० ॥ ७० ॥

तिताला।

बदरवा गरजन लागी री आली, आज री॥ रङ्गपाल दमके दामिनियां मोर पपिहा बोले झूलनवारी साजोसाज री॥ब०७१॥

उमड़े बादरवा आवैं दामिनि दमकावैं मधुर मधुर धुनि, छन छन गरजि सुनावैं॥ उमड़े०॥ लगो रंगपाल पिय मनवां डुलन, अब चलिय झुलन, बन छायो हैं फुलन, झुकि डरिया झुमन, कल कालिन्दी कुलन, चहुं ओरवां मोरवां गावैं॥उ०७२॥

पुनः।

झूलत रस बस प्रीतम प्यारी। बरसति रिमझिम घहरि घटारी, छन छन छहरति छलकि छटारी॥ झूलत०॥ कूकत मत्त मयूर अटारी, बहत समीर त्रिबिधि श्रमहारी, झनकत झिल्लीगन निसि कारी, जगमग जोगनको उँजियारी॥ झूलत०॥ हरित भूमि जहं तहं अनिनारी, पहिरी छिति जनु चूनरिया री, कुसुमित कुंज पुंज बनवारी, झूमति सुमन भार द्रुम डारी॥झू० सखि जन भूषण बसन सवांरी, गाय बजाय झुलावहिं बारी, निरखहिं सुखमा निमिष बिसारी, रङ्गपाल तन मन धन वारी झू०॥

दादरा।

प्यारी झूलो न! रंग हिँडोरवां। आयो सावन मास सुहावन झपटि कयल की कोरवाँ॥ बरसत रिमझिम घन दामिनियां दमकि रहीं चहुँओर वां॥ मोरवां कूकि मनहिं हटि बोरत रंगपाल रस बोरवां॥ ७४॥

चलत्यू नाहीं झुलन झूले बगियाँ॥ सावन आये सनैहिन

की भगियां ॥ चल० ॥ रंगपाल चढ़ो रंग चौगुनो तोरी चुनरी छयलवा कि पगियां ॥ चल० ॥ ७५ ॥

चुनरिया लालो रँगावो मज़ेदार ॥ आइ सावन की बहार ॥ चुनरिया० ॥ उमड़ि घुमड़ि रही कारे बदरवा रिम झिम परत फुहार ॥ रङ्गपाल पिय झूलो झुलावो कुंज कदम की डार ॥ चु० ॥ ७६ ॥

झूलैं पिय प्यारो रंग हिंडोरवां ॥ ज्यों ज्यों झोका देत रसिक प्रिय त्यों त्यों छपटति कोरवां । बोरत मनहिं परस्पर दोउ प्रेम रंग गहे बोरवां ॥ रंगपाल जू निरखि हरषि छवि मौज सांझ अरु भोरवां ॥ झूलैं पिय प्यारो० ॥ ७७ ॥

तनि झुकावन झोंको संभारि पिया ॥ तूंतो बेदरदो दरद न जानत डरपत है अति मोर जिया ॥ देखत नहिं कसि टेढ़ कँपति मोरी छपटति हौं जब तोरे हिया ॥ रंगपाल निज कर धरि देखो धक धक होति छयल छतिया ॥ तनि० ॥ ७८ ॥

॥ मागधी वा पुरबी ति० ॥

रंग हिंडोरवां, छपटि तोरे कोरवां, सावन मोद हिलोरवां, झुलब रस बोरवां, रे साँवलिया ॥ रंगपाल छाये घन घोरवा, दामिनि दुति चहुं ओरवां, बोलन लागी मोरवा, रे साँवलिया ॥

सौंहन करि बिसवास बढोले, हिंडोरवाँ चढोले, रे, बालमुआँ ॥ बेदरदो कसि झोकवाँ झुलौले, रंगपाल छल छौले, कमर लचकौले रे बालमुआँ ॥ हिंडोरवां ॥ ८० ॥

झूलि रँग बोरवा मैं, चटकी चुनरिया, रँगावो सुही पगिया

रे सांवलिया । रङ्गपाल पियरङ्ग हिडोरवाँ, झुलन चलो, बगियां रे सांसलिया ॥ रँगावो सुहो० ॥ ८१ ॥

डोलत मोरवा छपटि तोरे कोरवाँ, झूलव रे,, रसरङ्ग-हिँडोर ॥ झूलवरे ॥ रङ्गपाल छाये घन घोरवा दमिनियां,, दमके चहुँओर ॥ ८२ ॥

अन्य गति ।

समझि झोका, दीजिये मोर प्रन ॥ झूलव कैसे विहान ॥ स० ॥ रङ्गपाल निज कर धरि देखो, लाग हिया थहरान ॥८३॥

समझि झोका, दीजिये बलिहारी । हाहा रसिक सिरोष सुमनसी, सिसकति है सुकुमारी ॥ धक धक होत छतिया होत हमारी लचकत अङ्ग निहारी । रङ्गपाल तुम दरद न बूझत, हमरी तो प्राण पियारी ॥ समझि० ॥ ८४ ॥

उमड़ि घुमड़ि आये कारे बदरवा, बिजुरी चमाके, चहुं चहुं ओर ए रामा । उमड़ि० ॥ चातक अरु मोरवा किये किये शोरवा, सीतल पौन झकोर ए रामा ॥ रङ्गपाल बलि बालम कोरवा, झूलव रङ्ग हिंडोर, ए राम ॥ उमड़ि० ॥ ८५ ॥

॥ पस्तो ॥

हियाप्यारी दोज झूलैं, हिंडोरे वाह क्या कहना । सहज सौरभ के चहुंओरे, झकोरे, वाह क्या कहना ॥ हरे झू देत झोंके के, उझकती तानती भौंहैं, इशारे नैनके करती, निहोरे, वाह क्या कहना ॥ मजे मुसका हिलाती सिर, दबाकर जीभ दांतोंसे थरकती सिसकती नासा, झिकोरे, वाह, क्या कहना । निरखि

छवि की छटा अनमिष, सखीजन रङ्गपाल सबै, उदधि आनन्दकी लेतो, हिलोरै, वाह, क्या कहना ॥ पिय प्यारी० ॥ ८६ ॥

हिँडोरे की बहाराई, अहाहाहा ओहोहोहो। घटा नभ सावनी छाई, अहाहाहा, ओहोहोहो ॥ चमकती चमाचम च-पला करैं सिखि शोर चहुं ओर, सुगन्धित पौन लहराई, अहा-हाहा, ओहोहोहो ॥ सिया रघुनन्द झूले हैं, चलैं छवि आज की देखन, झुलाती आलि पद गाई, अहाहाहा, ओहोहोहो। नई नई होति छवि छन छन, लखेहौं रङ्गपाल बने, कहै कवि क्यों सु बलि जाई, अहाहाहा, ओहोहोहो ॥ हिँडोरे की० ॥ ८७ ॥

चलैं छवि देखने आली, अहा हाहा, ओहो होहो ॥ सुभ्रां को क्या आदा वाली, अहा हाहा ओहो होहो। जटित मणि-गण हिडोरे मैं, छकै आनद झमकि झूलैं, बनै राघव वनमाली, अहा हाहा, ओहो होहो ॥ सजे पट भूषणो लाले, सखी जन गाय शुभ सावन, झुलाती प्रेम रस पाली, अहा हाहा, ओहो होहो ॥ नचैं बन मोर कहि शोर, लहरती छन छटा छन छन, बरस्ती घिर घटा काली, अहा हाहा, ओहो होहो ॥ पवन झूकन लता बेली, सु लहराती सुमन वाली, रही झुकि भूमि द्रुम डाली, अहा हाहा ओहो होहो ॥ मिलो कहुँ रङ्गपाले ना युगल समता हरषि वारे, अमित रति काम की आली, अहा हाहा, ओहो होहो ॥ चलैं छवि० ॥ ८८ ॥

हिडोरे झूलती सँग लाला के श्रीराधिका प्यारी ॥ जड़े नग लाल के भूषण बसन तन लालही धारी। बजा कर साज गाती हैं, लगाती तान मनहारी, झुलाती झोंक रसवारी, भरी

आनन्द सखो सारी ॥ छनक छिप कामिनी छन में सुछहराती छठा भारी, गरजती मन्दहो रिमझिम, बरसती घिर घटा कारी॥ लखें छबि रङ्गपाल अनूप, त्वण तोरी निमिष टारी, युगल बांकी अदापर लाखहों रति काम बलिहारी ॥ हिंडोरे झूलती० ॥ ८८

सँग झूलती नँदनन्दके वृषभानुकी लली। भूषण बसन साजे सुनन, मन प्रेम सो पली ॥ सु बितान जरींदार झालर मोतियोंकी लगी, छड़ लाल नीलम खम्भ वो पुखराजकी पटली ॥ जगमग हिंडोरे की चहुंचा छहर्ती छटा, गाती झुलाती हैं रसोली झोंका सो अली ।रिमझिम बरस्ती गरज कर धुनि मन्द विर्घटा, छहरा रही छन २ चमाचम् त्यों चमक बिजली ॥ छबि लखि हरषि सखि तोरो तृन, बलि रङ्गपाल कहै, युगयुग जियो जोरो सु यह अनुराग रङ्गरली ॥ सँग० ॥ ८० ॥

॥ सावन ॥

गरजि घुमड़ि बदरा बरसत आइ सावनकी बहार। बिजुरी चमाके मोर बोलत, झिल्लिनकी झनकार। सीतल पवन झकोरवन, झूमति कुसुमति डार। रंगपाल रस झुकावन, झूलव तो सँग यार ॥ ८१ ॥

आय रे सावन मोरे बालम, झूलिय रङ्ग हिंडोर । जगमग जुगनू अँधेरी रात, चपला चमाचे चहुं ओर ॥ गरजि घुमड़ि बदरा बरसत, बोलत चातक मोर । रङ्गपाल मनभावन, सीतल पवन झकोर ॥ ८२ ॥

उमड़ि घुमड़ि बदरा बरसत बुन्द लगे जैसे बान। चमचम चपला चमकि रही, जैसे कहर कृपान ॥ वा निरमोहिया बलम

से कहियो बटोहिया सुजान। रंगपाल ब्रज बिरहिन, केहि विधि राखैं प्रान ॥ ९३ ॥

॥ कजरी ॥

घिरि घिरि बदरा कैरो गरजै कोउ ना बरजै रे रामा। एक तो सूनि सेजरिया, दूजे सावन राति अँधेरिया, हमरा रंगपाल बिन बालम, जियरा लरजै रे रामा ॥ ९४ ॥

हमको सावन छोड़ि अकेली, सखि मनभावन चले गये। हेरत जात हेरात चेत चित कुसुमित द्रुम अरु बेली ॥ करत कुलाहल करत मोर चहुं ओरन चूमि सुरेली। रंगपाल क्यों राखौ जियरा, लगी बिरहकी सेली ॥ हमको० ॥ ९५ ॥

आये सावन मास सुहावन, मधु बन माधव छाये हो। हमको लगत भयावन चहुँदिसि लागे मोरवा गावन, बरसत उमड़ि घुमड़ि बदरा ये, औरहु जरत जराये हो ॥ पतियो नाहिँ पठाये अबलौं कछु संदेसहु न पाये, भेजे बनिहैं अब जियराये आवन अवध बिताये हो ॥ रंगपाल हिय लाये छन छन सुख सनेह सरसाये, अब नहि जानौं सखि क्यहि भाये, हमरी सुधि बिसराये हो ॥ ९६ ॥

अन्यच्च ।

घन गरजै जियरा लरजै, अलि कोउ ना बरजै रे। चम चम चपल चमकि अँधेरी रैन अकेली तरजै, रंगपाल मोरवा सोरवा सुनि, होत हिया बिच दरजै, वा निरमोहिया बालम से, आलि कोउ ना अरजै रे ॥ ९७ ॥

अन्यंच ।

छतियां छेल बेग लगि जाओ जियरा जिनि तरसाओ हो । पीर भरी मैं धीर नहीं अब बिरहताप सियराओ ॥ इन दरसन प्यासी अँखियनको रूप सुधारस प्याओ । रंगपाल तोपर बलिहारी अब सब कसक मिटाओ ॥ छतियां ॥ ९८ ॥

उमड़ि घुमड़िके बरसै, बरसै रे घन घोरवां, सोई झपटि झेलकी कोरवां, दामिनि दमके दमकै रे । रंगपाल चहुंओरवां गावै, गावै मोरवा आवै, आवै सीतल पौन झकोरवा, जुगुनू च-मकै चमकै रे ॥ ९९ ॥

मेरे लागी मेहदिया, बेंदिया प्यारे नेक सुधार । बेसर सो लट उरझि गई है हाहा दै निरवार ॥ लेति बलैया पैयाँ लागूं मोतन नेक निहार । रंगपाल तेरे कर कंजहि, चूमोंगी सौ बार ॥ मेरे० ॥१००

मेरे चूनरको रंग जैहै, लीजे भीजत मोहिं बचाय । जैहै कछु नहिं कामरियाको, हाहा लगियत पांयं ॥ बादर गरजै दा-मिनि दमकै, जियरा मोर डराय । रंगपाल बलि जुलफनवारे छतिय लै छपटाय ॥ १०१ ॥

गिरि गइ बेंदिया मोरि बिछलि कै, हाहा दीजे नेक हेराय ॥ कारी घटा घिरति चहुंदिसिते, आई सांझ नेराय ॥ हैं नहिं कोउ सङ्ग सखी हूं, कासे कहिये हाय । रंगपाल बलि जुलफन वारे, लगियत तेरे पाय ॥ गिर गइ० ॥ १०२ ॥

लागो वारे की सनेहिया नाहीं छूटै बांके यार ॥ तोहो बिन

जियरा नाहीं मानत हमार ॥ देखेबिन एक छन कलप हजार ॥ बरु रंगपाल कोई मारे तरवार ॥ लागो० ॥ १०३ ॥

अन्य।

बन ठन चली गोरी खेलने कजरिया ॥ रंगपाल बर बस मन लेगई सो हरे हरे हँसि छोरि तिरछी नजरिया ॥ बन० ॥ १०४ ॥

अपरञ्च।

गैली खेलनि कजरिया, सो, नजरिया, लागी रे ॥ संवली सुरतिया, बसि गइ रंगापल मोरि अखियाँ, निँदिया, आवैना, सेजरिया, इश्क सजरिया बागीरे ॥ गैली खेलन० ॥ १०५ ॥

रतियां निदियां न आई अब मोहि भोरवा न जगाओ। बरजत हूं बतिया न बनाओ जाओ सौंहन खाओ ॥ पायन लगियत अब पायन परि मानिनि जाय मनाओ। रंगपाल हमको न सताओ उनहींको उर लाओ ॥ १०६ ॥

श्याम बँसिया बजावैं सखि चलो न मधुबनमें। झूलनके हित तेरो नाम लै सुनु बलि तोहि बुलावैं ॥ आये सावन मास सुहावन माते मोरवा गावैं। रंगपाल आनँद सरसावैं चहुंदिसि धुरवा धावैं ॥ श्याम बँसिया बजावैं ॥ १०७ ॥

झूलो प्यारे संग हिंडोर, सुहावन सावन आयो री। जब सनेह सरसावन, छवि दरसावन रस बरसावन, धावन लागी नभ घन घोर ॥ बिज्जु छटा छहरावन छन छन जोगन जोति जगावन, गावन लागी री बन मोर। रंगपाल मनभावन, कुसुमित कुंज पुंज छबि छावन, पावन लागति चलि बलि तोर ॥ १०८ ॥

चूनर मोरो लाल रँगावो प्यारे, अपनी सूही पाग ॥ दमकन लागी दामिनि बदरा रिमझिम बरसन लाग । यह सावन आवन मनभावन, उपजावन अनुराग ॥ रङ्गपाल जू रङ्ग हिँडोरे, झूलन चलिये बाग़ ॥ चूनर मेरो० ॥ १०९ ॥

छाये घन घोर वां, दमकै दामिनियां चहुं ओर वां, रामा झूलवे हिँडोर वां आई सावन की बहार ॥ पवन झकोरवां आवे रंगपाल रस बोरवां, रामा, गावे लागी मोरवा, आइ सावनकी बहार ॥ ११० ॥

बरसै, बदरवा दमकै दामिनियां चहुंओरवां, आवे सीतल पौन झकोरवां, बोले मोरवा ए हरी । आये मास सावन, भावन रंगपाल रस बोरवां, झूलव छपटि छैल तोरे कोरवां, रंग हिंडोरवां ए हरी ॥ १११ ॥

झूलैं आली प्रीतम प्यारी, रङ्ग हिंडोरवां, सावनमें । रिम झिम बरसत उमड़ि घुमड़ि घन घोरवां, सावनमें ॥ चम चम चमकति चपला चारो ओरवां, सावनमें । रंगपाल गावत रस बोरवां, मोरवां, सावनमें ॥ झूलैं आली ॥ ११२ ॥

पुनः ।

झूलत आली रंग हिँडोरे, नौलकिशोरी नौलकिशोर । घहरत घन दमकति दामिनियां, बन बन बोलत मोर ॥ तनो बितान जरकसी झालर, मोतिनकी चहुंओर । विविधि रंग फहरत पताक जनु सुरतिय अंचल छोर ॥ पटुली पदिक खम्भ मणि मण्डित, लगो पंच रंग डोर । इत उत सखी झुलावहिँ

गावहिँ, मेघ मलार, हिँडोर ॥ छहरति दुति फहरति पट लहरत सहज सुगन्ध हिलोर ।. रंगपाल छवि पर बलिहारी, रति मद काम करोर ॥ झूलत आली० ॥ ११२ ॥

श्रीमहाराजकुमार श्रीसूर्य्यवंशोद्भव क्षत्रियप्रवर श्री बाबू विश्वेश्वर बक्सपालजू देव वर्म्मात्मज श्री बाबू रुद्रनारायण पालजू देव वर्म्मा वीरेश विरचित रसिकानन्द नामक ग्रन्थ सम्पूर्णमस्तु ॥

इति ।

॥ उपन्यास ॥

अघोरपन्थी	।)	सतीचरित्र संग्रह	१)
अकबर उपन्यास	॥)	भूतों का मकान	॥)
अमलावृत्तान्तमाला	॥।)	कथासरित्सागर १२ भाग	६)
ईश्वरीलीला	।)	हवाईनाव	।)
कमलिनी उपन्यास	।)	मधुमालती	॥।)
कांष्टेबलवृत्तान्तमाला	॥।)	कुलटा	।)
कुसुमलता चार भाग	२।)	कुसुमकुमारी चारोंभाग	१)
सप्तम प्रतिमा	॥/)	कटोरा भर खून	॥/)
पद्मिनी उपन्यास	।)	किसान की बेटी	१।)
मनोरमा उपन्यास	॥/)	चन्द्रकला	१)
चंद्रकान्ता ४ भाग गुटका	१)	चंद्रकान्तासन्तति २४ भाग	१२)
जया उपन्यास	॥)	ठगवृत्तान्तमाला जिल्द १	३॥)
चन्द्रभागा उपन्यास	१)	संसारदर्पण	२)
दीपनिर्वाण	॥।)	दुर्गेशनन्दिनी दोनों भाग	॥।)
दलितकुसुम	।/)	दीनानाथ का गृहचरित्र	।/)
भयानकभ्रमण	॥।)	नरेन्द्रमोहिनी दोनोंभाग	१)
मायाविनी	।)	नरपिशाच चारों भाग	३)
राजसिंह दोनों भाग	१॥)	लङ्काटापूकी सैर	।)
विद्याधरी	।)	स्वर्णबाई	।/)
सुलोचना	।)	सत्यवीर	१॥)

मैनेजर—श्रीकृष्णवर्म्मा—बनारस सिटी।